पानी और पेड़

सुरेश चन्द्र "सर्वहारा"

पानी और पेड़

आओ! पानी पेड़ बचाएं
धरती पर हरियाली लाएं
ये अनमोल देन कुदरत की
इनका ना उपकार भुलाएं।

पानी है पेड़ों का जीवन
पेड़ बुलाते पानी के घन
इक दूजे के पूरक बनकर
करते ये इस जग का पालन।

पेड़ अगर कट जाएँ सारे
नहीं बचेंगे जल के धारे
हो जाएगी दुनिया बंजर
लोग फिरेंगे मारे-मारे।
हरे पेड़ को कभी न काटें
जल के स्रोतों को ना पाटें
करें पेड़ जल का संरक्षण
मानवता का संकट छांटे।

मानसून

मानसून के आए बादल
सारे नभ पर छाए बादल
अब तो गर्मी नहीं सताती
ऋतु वर्षा की लाए बादल।

रिमझिम रिमझिम बरसा पानी
धरती लगने लगी सुहानी
मानसून की नर्म हवाएं
बरसों से जानी पहचानी।

खेती है इस पर ही निर्भर
इससे भरते नदी सरोवर
मानसून यदि अच्छा हो तो
खुशहाली के बढ़ते अवसर।

तपता जब उत्तर का भूतल
ठंडा रहता दक्षिण का जल
तब सागर से उठी हवाएँ
गर्म क्षेत्र को देती हैं चल।

यही हवा फिर ऊपर उठकर
बन जाती है जलकण जमकर
वर्षा की ये झड़ी लगाती
तेजधार में या रूक थमकर।

मानसून यदि ना आ पाए
तो समझो सूखा पड़ जाए
अर्थ-व्यवस्था होकर चौपट
भूख रोग आ हमें सताए।

हम जलवायु करें ना दूषित
और नहीं भू को अवशोषित
बना रहे क्रम मानसून का
जन जीवन को करता पोषित।

संपर्क करें:
सुरेश चन्द्र सर्वहारा
3-फ-22, विज्ञान नगर
कोटा-324 005, राजस्थान
मो. 9928539446